

साहित्य अकादेमी सूँ पुरस्क्रित ओड़िया कविता-संग्रै

मगन धूळ

प्रतिभा शतपथी

राजस्थानी उल्थौ

अतुल कनक

मगन धूळ

साहित्य अकादेमी सूँ पुरस्क्रित ओड़िया कविता-संग्रै

मगन धूळ

प्रतिभा शतपथी

राजस्थानी उल्थौ
अतुल कनक



साहित्य अकादेमी

Magan Dhool : Rajasthani translation by Atul Kanakk of Oriya Award-winning collection of poetry *Tanmaya Dhuli* by Pratibha Satpathy. Sahitya Akademi (2009) **Rs. 60/-**

पैली खेप : 2009

साहित्य अकादेमी

मुख्य दफतर :
रवींद्र भवन, 35, फीरोजसाह मारग, नवी दिल्ली–110 001
बिकरी विभाग :
'स्वाति', मिंदर मारग, नवी दिल्ली–110 001

क्षेत्रीय कार्यालय :
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मारग, दादर, मुंबई–400 014
जीवण तारा बिल्डिंग, चौथौ माळौ, 23 ए/44 एक्स
डायमंड हार्बर मारग, कोलकाता 700 053
सैंट्रल कॉलेज कैम्पस, डॉ. आंबेडकर विधि, बैंगलोर–560 001

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN 978-81-260-2439-1

मोल : 60 रुपिया

छापण वाळा : पवन ऑफसेट प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110 032

बांदरवाळ

नायिका

सुणो!
कोय पराया का हाथां
कदी न्हँ,
भोगूँ छूँ जातनावां
आपणै ही हाथाँ
आप ही बुणूँ छूँ जाळ
अर आपूँआप उळझ-पुळझ'र
फड़फड़ाबो करूँ छूँ।

आप ही नूँत ल्यूँ छूँ
बरायाँ, अपजस
अधीज्योपॅण अर हळाबोळ।
निठुराई, जोर-जुलम
झूठा आरोपां
के सामै कूद पड़ूँ छूँ म्हूँ
फूट पड़ै छै पाँचू प्राण
गळगळा'र ब्हैबा लागै छै
लोही की नद्दी
सौर ले ज्यावै छै म्हारी पूँजी
लोही की नद्दी को ब्हैबो,

फेरूँ भी कम सूँ कम ळत्तान् मॅं
स्वाँर्‍याँ बैठी र्‍हूँ छूँ म्हूॅं
सिंघासन
जाबक रत्तान् को।
मरद,
माँगबा हाळा, चाण्डाळ
कदी राज को हाकम
तो कदी
ध्यान मॅं डूब्यो सन्यासी बण'र
ऊब्यो र्‍है छै
ऊँ
सिंघासन की
औळे-दौले की भौम पे
आपणी ही मरजी सूँ।
म्हूॅं सबसूँ छीट
म्हूॅं सबसूॅं दातार
एक ही ठाम पे
समस्या अर समाधान
लोही मॅं न्हाया
घावान् सूँ मिलता
अथरत्या हुलास की नांई
मूॅंगा मोळ की
आप ही लीला
आप ही कारज
हेळी म्हूँ
सबसूँ खास, म्हूॅं नाळी न्हॅं

मेट देबा पे अधीज्या
काळ का दूजा पख सूँ
ऊबी अड़ूड़ पड़ूँ छूँ
सगळा उच्चारणां सूँ, तानां सूँ
आपणीं मुळकण सूँ,
हाव भाव सूँ
चोट सूँ, चीत्या सूँ
मान सूँ, अमरोस सूँ
हद छै के म्हारी
सबसूँ कड़ी ईगसा सूँ भी
जलम ले छै
एक महाकवि।

सबदां को कामणगार्‍यो

सबदां का कामणगार्‍या छो थाँ
के सबदां ईं मार देबा हाळा
जमराज, काळ?

कश्यॉ पड़तो म्हॅंने बेरो
न्हॅं दूयो जा सकै कदी
थाँ का सवाल को
कोय भी उथळौ
अश्या अलूंठा ढब सूँ
मूण्डो फेर'र बावड़ जावैगा सबद...

बणी-ठणी
अधीजी हेळी की नांई
दौड़्या आवैगा
होठां की बारसौत तांई
ठ्हैर जावैगा ठिठक'र
धूजता होवैगा
हो र्‍या होवैगा गळगळ्या
पॅण आपणां
अनचाह्या होबा की ळाज सूँ

छेकड़ बण जावैगा
रूँख, के भाटो।
आज तांई तो म्हूं
भांत-भतीला मॅड्या जाळ मॅ
बांध लेबो करै छी आभै ई
फेर आपणीं चाहना सूँ
खोल देबो करै छी
पखेरू की नांई
सबदां ई उड़ा
अंतरिख की बाड़ तांई
खँदा देबो करै छी
आपणा भांत-भतीळा अनुभौ।
म्हारी चेतना की दूहैळ पे
थां का कोय सवाल की
आंठ होतां ही
सुमर्या ग्या सबदाँ को अरथहीणपॅण
अर ऊँ अरथहीणपॅणॉ ई
परबारै राखबा बेई
जगती का सगळा गुर
म्हारै हाथै लाग ग्या।

सबदाँ को
अश्यो ठेठ अबोलोपॅण डॉकर
भला कश्यॉ
सामै लेवूँगी
थाँ का अधीज्या सवालाँ ई?

ओ, सबदाँ का संघारक
म्हारा साजन
म्हारा परमकाळ
आज अटूट चाहना छै म्हारी
एक सबद उच्चारबा की
बाकी बची उमर के सांठे
जे होवैगो सांचो पडुत्तर
जीं के पाछै और कांई भी
क्हैबा की दरकार न्हॅं होवैगी
लाज सूँ मरणो न्हॅं पड़ैगो

सगळी उमर
क्हैबा अर न्हॅं क्हैबा का
अळूजबा मॅं
बीत जावैगो
म्हारा दिसाहीण हिवड़ा को
दण्ड भुगतबो।

नैम

बग़त कोय न्हॅं अब,
ओछापॅण ईं
भींच'र पकड़्या सताँ
अकारज धपळका मॅं डूब्या
बैरान भूलभौलाया मॅं
बीतगी जिनगाणी म्हारी।
अचीत्याँ ही
फिसलगी कांधा सूँ
राती-नीळी सॉवळी
नुआ बरणॉ सूँ सजी
म्हारा हिवड़ा का
संगीत की ल्हैरॉ
खुल'र आती बग़तॉ
आज,
आखै आभै मांही
बुझबा बुझबा जशी हो'र
चिपकी पड़ी छै गोधूळी/
अब बग़त कोय न्हॅं।

क्हो,

कांय तो व्हो,
झाँको,
एक बेर झाँको,
ल्यो,
अबारूँ ही बीत्या
अभिसेक की रतनार कुमोदनी
जीं की न्हँ रीतबा हाळी सौरम
भिजो दे छै
म्हारी हथेळी
अब बग़त छै
सगळी बाताँ बताबा को
एकलापॅण को हेत
सूँपबा को
जनम जनम को पछतावो
मेटबा को।

अब छैकड़ली,
खलकट्या का दरद का
लूँठा बहाव हाळा आँसुवां का
जमबा को बग़त छै।

भापड़ो बग़त
काँई भी न्हँ राख पावै अंगेज'र
जद ही तो काळम्या, अपजस की काळिख सूँ
ढाँप्यो रहै छै उणग्यारो
कतनो बैगो सो

आभै की गेल मॅं
धूँधळी सी रेख जश्यो
भागतो र्‌है छै
छिन बेई थम जाबो भी
कोय न्हॅं ऊँका बूँता मॅं

झाँको-झाँको
बाकी बच्या छिन
थिर कोय न्हॅं, डाळ का पीळी पात की नांई
डूँगर की चोटी पे
टुकड़ाता तावड़ा सी धाकाधीक
क्हैबा क्हैबा बेई छनीक
कण्ठ म्हारो हुळस मँ, अधीज्यो
आज जे
सबदॉ को न्हॅं रीतबा हाळो भण्डार
एक बेर खूँट जातो
म्हूॅं चुन लेती
एक सबद
छैकड़ली बेर।
पिरथी का उनमुग़त काळज्या की नांई
उघाड़ो आपणो चेत
अरथ भर्‌या
अणहद काळ
सूँप देती साता सूँ।

सैं बीचै

घेर घुमेर गेल मॅं
घूमतो जा र्‌यो छै राज म्हारो
जलम...मौट्‌यारपॅणो...बुढ़ापो
मरबो...जलम...मोट्‌यारपॅणो
म्हूँ फाँक द्‌यूँ छूँ
आपणो डीळ
चढ़ चुक्या पुसपां की नांई,
फॉक द्‌यूॅ छूँ
फेर धारण कर ल्यूॅ छूँ
बेर-बेर
ई लेखे अधबीचै छै
एकसारपॅणो
म्हारा सरूप, हुलास अर सुपनां को।

बाट न्हाळबो...पाबो...रीत जाबो
रीत जाबो...बाट न्हाळबो...पाबो
आँख्यॉ मॅं ही
सगळा राज का सार
समेट्‌याँ
बाट उडीकती बैठी

ऊँ छिन की
रोवणी पाती के पाछै
दिसा दिसान् तांई नपट रीतापॅण मॅं
थाँ ई खो देबो
यो ही तो छै म्हारो बिलास-बैराग।

बग़त सूँ पाछै भी बग़त
पसर्‌यो र्‌है छै
अटूट सांप्रत बण'र
म्हूँ घूमती र्‌हूँ छूँ
घुमेरदार गेला मॅं
घूमती र्‌हूॅं छूँ...
कुण छै सैं बीच की ठांव पै
दप दप बळै छै
जुपै छै...बुझै छै
कांई थैं ही छो उठी
कांई थैं ही छो ऊ सैं बीच को बिन्दु
जे परिधि सूॅं
एक जशी दूरी बणा'र
थिर र्‌हो छै हमेस?

गाठो इंद्रधनख

बरखा होई
अटाटूट बरखा
आखै आभै मांही
एक सूँ दूजा बादळा मॅं कूदती
नाच री छी बीजळी
अगन का रींगट्या खेंचती
जड़ान् का चितराम जर्शा।
घोड़ान् की टापाँ सुणाई दे र्‌ही छी
आभै सूँ
पिरथी सूँ
दंताळा हाथी ने
सूँड उठा'र
फाणी उँडेल्यो
बरखा को राज
सारा जंगळ मॅं
अणकाबू सो
पसर र्‌यो छै।

घोड़ा की टापाँ थमगी
स्यात् कोय बटोही

कठी दूरै चाल द्यो।
दंताळो हाथी सो ग्यो
थाक्यो हार्‌यो
रोही की झाड़ियाँ सूँ
बरखा का फाणी की धार व्हैगी।
यो अश्यो बरखा को फाणी छै
जीं मॅं
अलेखूँ टपूकड़ा छै
बहती थकी सैकड़ूँ छांवळियाँ
इंद्रधनख की।
डाळ-पात फाणी की धार
कनसुर्‌याई
बंतळ करै छा
व्है र्‌या छा
झाँको-झाँको
कोय धनखधारी ने
डूँगर के पैली पार
टिका मैल्यो छै
आपणों रंग-बिरंगो धनख
जोड़बा बेई
ओळाती का डूँगर ईं
पैलाती का डूँगर सूँ।

साँच्याँ ही यो इंद्रधनख
कश्याँ टिक्यो छै!
ळगौळग झरती

हुळसती बरखा का टपूकड़ा पे
ठीक थाँ की नांई
थाँ की नांई र्‌है छै
साँच को सत्
छिन छिन बदळबा हाळी याँ
ठाम, बेळा, घटनावाँ के बीचै
जश्याँ अणधूज्याँ, थिर र्‌हौ छो
थिर हो जावो छो फेर
कामण की नांई घेर्‌याँ र्‌हो छो
बांध लो छो म्हँई
रंगीन अर रंगहीन ई गूँथ'र
चेत की भोम पे
और भी गाठो, छू लेबा जश्यो
एक सरूप आँको छो।

खींच्या जा र्‌या छो कठी?

अठी म्हारो घरबार
अर बौवार
अश्यॉं ही पड्‌या र्‌या
कोय सुपनां मॅं मगन
खींच्या ज्या र्‌या छो अश्यॉं
छोड़ो, म्हारो हाथ...

थांका सुपनां की धमनियाँ मॅं
ब्हैतो रग़त
हो सकै छै म्हारो
सांची बताओ
या पिरथी डॉंक्याँ पाछै
कीं सून की राजगादी पे
ले जा'र बैठाओगा म्हॅं ई?

अठी तो म्हारा हिवड़ा का
सैं सूँ स्याणा पाडाझर मॅं
ळगौळग आँसू उळ र्‌या छै थाँ का
छिन को हबोळो छो थैं
चितराम मँडी धूळ छो

बग़त का कश्या बिन्दु पे

मिलूँ म्हूँ धाँ सूँ
मिलताँ ही कट जावूँगी
ऊँ ही छिन,
हो जाऊँगी दो टूक।

प्हैचाण्या बग़त का
कोय बिन्दु पे तदी
असंभौ छै थाँ सूँ भेंटबो
या जाणताँ सताँ भी
घर गिरस्थी
काण-कायदा सगळा तज
कश्याँ त्यार होई म्हूँ
चाळबा बेई थाँ की लैरां।

नरी दूरै
डूँगर के पीदै की बस्ती का काळज्या पे
नुई कूँपळ की नांई छै
आपणां एकूँएक सुपनां
भोम पे रींगट्या खेंच-खेंच'र
लिखबो करूँ छूँ म्हूँ वां का नांव
अर फेर
सहलाबो करूँ छूँ वां ई
न्हँ होवे जद कोय अनै कनै,
जश्याँ साँच्याँ ही

जी उठैगा वे
म्हारा सहला देबा भर सूँ।

म्हारा डीळ का
कोय कोय सैं सूँ भावुक तारान् मॅं
फूट उठै छै सुर
ऊँ की ल्हैरां

मॅंडराबा लागै छै पौनमण्डल मॅं
क्हो, कद वे ल्हैरॉं
दमकैगी दिसा दिसावाँ मॅं
थाँ के तांई परस करेगी
कतरो फाणी
कतना आँसू
कतना-कतना
सबद तरसबा पे?

अर कद ताँई
लिखबो करूँगी म्हूँ कविता
बना वरण की भासा मॅं
क्हो न, कीं लेखे
जुगाँ-जुगाँ ताँई

आपणीं जड़ॉं
रूँख की जड़ॉं सूँ बाँधी रखाणूँगी
कीं लेखे

सब ई नट'र
पग बदा
चाल द्यूँ
थाँ की लैरां
फेर एकली
रीता खेत मॅं
एक तुणकल्या की नांई
धूजबो करूँगी।
आपणो लोही
आप ही चखबो करूँगी
थाँ का फेर
हाथ पकड़ नूँत'र ले जाबा पे
चाल द्यूँगी दुनिया फल्लांग।

सून की मालकन

बावड़ ग्या वे मनख
खुलासो कर'र
छेकड़ली जरूरत को।

गोधूळी की नांई आंथती जाती म्हूँ
दिसा का छैकड़ला खूण्या की आड़ी
एक हाथ हिला'र
दूजा हाथ सूँ
समेटूँ छूँ आपूँआप ई
रूँख-पात की माटी सूँ...

बस, गिरबा ही हाळो छै
जूड़ा सूँ गैंदो
अंधारा मॅ बुझबा लागैगो उणग्यारो
जद कोय न्हॅ होवैगो
तड़काव अर सांझ की हळाबोळ
म्हारे खैंचो मार'र पूछैगी
वे सगळा
कोय अरथ सूँ गढ़्या लोही-लोथ छै
के हेत मेट्या मनख?

म्हूँ कांय भी न्हँ क्हूँगी।
कोय की आँख्याँ मॅं
म्हूँ डूब गी छी कदी
सुपनां का रूँख की चोटी पे डोलता
बायरा सूँ भी राती
एक तीतळी उड़ी छी

म्हारा काळज्या मॅं।
म्हूँ कशी माटी
कश्या फाणी-बायरा अर तेज सूँ
गढ़ी गी छूँ कुण जाणै
धुंध का रींगट्या की नांई तो दीखूँ छूँ
कश्याँ दन खाडूँ छूँ
कळपूँ छूँ, मुळकूँ छूँ

आँखर अर आवाज़ सूँ हीण
भासा मॅं बंतळ करूँ छूँ
कोय न्हँ जाणै।

वे लोग
म्हँई फॉकबो चाह्वै छा
उजाड़ कोठरी का अंध्यारा खूण्या मॅं
न्हँ जाणै म्हूँ कश्याँ
बचगी
उणग्यारो ऊँचो कर'र र्‍हैबा लागी
परमेसर जाणै छै

म्हूँ कशी हीमत सूँ बंतळ करबा लागी।

आपूँआप ई सोधबा मँ, पाबा मँ
जीत्योड़ी छूँ म्हूँ
हाथ बदाओ म्हारी आडी।

घूँसाळा मँ बावड़ता पाखी
सलीब बना चुक्या छै आभै माँही
कांई ब्है जाबा की नांई
धूज उठबा जश्यो
कोय अजाण्या देस को उछाव
फैल ग्यो च्यारूँ मेर
तुणकळ्या भर्या अंधारा फाट मँ
झिळमिळा उठी फाणी की बूंदाँ
म्हँई तो अब
अणबोल्याँ ही बावड़नो पड़ैगो
नसाँसाँ सूँ धूजता
डूँगर अर खोह मँ,
जाणो छो
मुकुट अर ठाठ
सगळा अठी ही मेल के।

प्रगट्यो करमहीणपॅणो

हथळेवा में उभर्‌यायो
काळज्या में थिर सूॅप्यो
थॉको पड़बिम्ब
डीळ पे तर ज्यावे छै
थॉकी छाँवळी
कठी छै टूटण, कठी?

आज तो पाछै खँदा द्यो भाग ईं
बोली, थाँ सूँ
नाळा होबा की घड़ी जे आ गी
बाट न्हाळता बग़त ईं
सैणां सूॅ समझायो
रूको, मिलणो ही तो छै
छैकडली बग़त पूग जाजो
म्हूॅ ओळमो न्हॅ द्यूॅगी
कोय भी।

पॅण ईं दन-रात
उजास-अंध्यारा, आज काल सूॅ हीण
ईं महान काळजीत्या ईं

अबार नापबा मत बैठ, जा—

नुआ मिलन का ई
धांसा फूटबा की बग़तॉ
सूरज सूँ किळोळ करबा हाळी म्हारी
आतमा सूँ, अंगान् सूँ,
एक एक रूआँ सूँ
एक एक धोळो कॅवळ
नैळा कॅवळ, राता कॅवळ ने
पॉखड़ियॉ खोल्याँ
धडकनॉ की नांई धूजबा लाग्यो
बना रोक-टोक
अठी उठी भँवरान् को गुनगुनाबो
सौरम सूँ डोलती माटी
आखै आभै मॅ
घुमड़तो हैळो
सबद न्हॅ छा अर लुकी छी आवाज़
पाँचूँभूत पूछ बैठ्या
कुण छै? कुण छै?

आधो-आधो परिचै
आधो पतियारो अर हेत
दूज का चाँद की नांई
अधमुँद्या नैण
अधखुल्या होठां को गीत
आधी लुकी, आधी सूझती

एक मूरत
पकड़ताँ-न्हँ पकड़ताँ
आधा सूँ बैसी जीं का
टूकड़ा टूकड़ा हो चुक्या छै।

ईं जगती मॅं
जाबक एकलापॅण मॅं
म्हारा राजपाट ईं ले जा'र पूछ्यो
तू तो अब मूरख न्हँ रही
भाग सूँ, बग़त सूँ
छूट'र
बड़ा हो जाबा की बात
भल्याँ कद सूँ सीख्याई?
काँई सॉच्यॉ ही आज सूँ
लाछन, अपमान
अबखायाँ सूँ तू
छूटगी?
भाग ईं बना डाल्यो
आपणां चाकरां को चाकर
के सगळा आरोपां सूँ
मुग़त कर द्यो
भापड़ा भाग ईं
आज सूँ?
बग़तसर सगळी चीजाँ
धूँधळी पड़बा अर मट जाबा का
गुण सूँ छुटकारो पा गी?

चत्त न्हॅं द्यो ऊँ आड़ी
जाणै छी, पूछबा हाळो
जश्यॉ जाबक न्हॅं जाण पा र्‌यो
म्हॅंनै आज तांई जाण्यो छै, भोग्यो छै
थॉं के तांई।

जगत् की गैल पे
अश्यॉं ही मिलबा हाळा तावड़ा को
ळगौळग मिलबो, हळाबोळ
म्हारी नांई ऊँ ने

कतई न्हॅं टटोल्यो
अतना, स्याळा मॅं, अतना उन्हाळा मॅं।

कड़ो बंधेज

यो कश्यो उजास़ छै
कश्यो उजाळो
खिल उठ्यो म्हारा अस्तित्त मॅं
उग्यायो कश्याँ म्हारै भीतरै!
प्हैली कदी न्हॅं होयो अश्याँ ऊगबा मॅं
माथा सूँ पग तांई म्हारै
धार-धार जौत अँकुर्याई।

कश्यॉ बखाणूॅ म्हूँ
आपणां कण कण लोही का
आपणी एकूँएक कल्पना का
वरण विच्छुरण को—
जे संभौ ही कोय न्हॅं
अश्या ऊजळा ऊँ इस्फुलिंग को
लोठोपॅण ल्याँ
नप्या-तुल्या ईं जगत् मॅं
कश्याँ जिऊँगी म्हूॅं
कश्याँ आऊँगी, जाऊँगी?

जश्यॉ म्हॅसूँ दोय आंगळ ऊँचै
लटक्यो छै आभौ

म्हारा अभिसेक का मंतर
उचार र्‌यो छै
धीरां धीरां म्हारो तेज भरो अस्तित्त
म्हारे भीतरै
छलांग लगा र्‌यो छै ऊपरै
दिसा-दिसान्‌ के परै, सून मॅं।

जद के, अनै-कनै
या कशी डरपाती छांवळी छै
जे बदती ही जा री छै
पगाँ के पीदै सूँ
घाटियान्‌, रोही, डूँगर
अर मरू भोम सू हो’र
मरूथळ मॅं घिरी
बरखा की आस
टूट जावै छै,
डूँगर के पीदै
धूजबा लागै छै
ढोराँ का डरप सूँ सताई भोम,
तुणकळूया अर पात को
ऊजलो हर्‌यो उणग्यारो
पड़ जावे छै काळो
धान की क्यार्‌याँ मॅं भर्‌यो
चकमक नैणां सो फाणी
दमन्यो लागै छै,
या डरपाती छाँवळी
नद्‌दी मॅं, नाळा मॅं

नान्ही-नान्ही ल्हैरॉ का
मॅडाण तोड़'र
बद जावै छै समदर की आड़ी।
सगळा समदर ई ढॉँप'र
आपणीं कुचमाद सूँ
डरपावै छै
दिसा को छैकड़लो खूण्यो परस ले छै
अर उठी सूँ ही छल्लांगे छै
आभै की आड़ी।

उजाळा की सगळी ल्हैरां
हुळसै छै
ज्यादै सूॅं ज्यादा
बासक की लांबी छांवळी
कीं लेखे लपलपावे छै जीभ?
डरप अर दमन्यापॅण सूॅं धूजती
पूछूॅं छूँ म्हूँ
थाँ कै ओळावै
पूछूॅं छूँ पिरथी सूँ
आभै सूँ
कुण काळजीतणो छै
कुण छै सांचो
कुण छै म्हारी ओळखाण
बोलो...

उजाळो के अँधारो
म्हारी सत्ता का

लकदक मण्डप में
कीं लेखे अतनो रोळो करे छै
या छाँवळी/
गरज उठे छै
बुझती बग़ताँ
बळती बग़ताँ

कठी सूँ पडुत्तर आवे छै
नमळा-कड़ा सुर
सांच्यॉ ही
आभै का छै
के छै थाँ का?
उजियाळा रतन सूँ जड़्या

सिंघासन पे बिराज्या
म्हारा साजन
कॉई थैं ही क्हो छो...
उजाळा की हेळी अरी,
कांई तू फगत उजाळा की छै
अँधारा की पॉतीदार कोय न्हॅ?
यो उजाळो
यो अँधारो
ये म्हारी दो बाथाँ
औपता भुजभेंट का भाव मॅ
घेर्‌या र्‌है—
थाँ ही तो छो।

नद्दी

फेरूँ नुओ छै बिसरबो
बिसरगी
आपणीं ही ठाम
आभै सूँ, डूँगर सूँ
कर्‌यो कौळ
न्हॅ ठ्‌हैरबा को/

बिसरगी।

म्हॅई कश्याँ पड़तो बेरो
के ऊब्या होवैगा थाँ अठी
मूरत की नांई
अड़ूड़ चाहना सूँ नीळा
समराट,
के सन्यासी की नांई
दीखता होवैगा न्हॅ सौराया, धीजहीण
चळू भरोगा
फेर दमन्या हो जाओगा,
रस भर्‌या होठां जश्यो
थर थर कॉपतो फाणी को चळू

जीं मॅं
कुण को पड़बिम्ब देख'र
आपूँआप ही बिसर जाता होवैगा।
दोफ्हैर आंथ्यॉं रूक ग्यो होवैगो
रूँख पात पे, कराड़ां पे
म्हारो हियो भीजतो होवैगो
हळद फाणी सूँ
ईगसा करतो होवैगो सोनार तावड़ो
थाँ का सूनां जश्या डीळ सूँ।
म्हूँ फेर बिसर ग्यूँगी
आपणी ही ओळखाण
थाँकी चावना की गूॅंज बण'र
गचती जाती होवूँगी
अर टूटती जाती होवूँगी।

आया छा थैं
म्हारा सपनां मॅं एक बेर
जद म्हूँ
दरदहीण भाटा की आड़ मैं
कतना जनम फ्हैली का
न्हॅं प्रगट्या दरद सूॅं दमनी
फूटबा ही हाळी छी।
ऊ सुपनो
पराणो कोय न्हॅं
नत नुओ छै,
थाँ की तस

नद्‌दी को बहाव हेरती
नत नुई छै
अर नद्‌दी पार करबा को
थॉको संकळप
लागै छै
घणों नुओ।
कांई म्हूँ विरूपा नद्‌दी की
नीळी वेणी छूँ
के महानद्‌दी की
ऊँडी अतळी गोद
थाँ ने हैळो पाड्‌यो...
कठी छै म्हारो आँधो भामरो
मदगाळ्‌यो हिंसकपॅणो कठी छै

कठी छै म्हारी
कराड़ाँ लाँघ जाबा की हूँस?
म्हारा बहाव मॅ छै फग़त स्वाल
स्वाल ल्हैरां बणबा पे
थाँ का अधमुँद्‌या नैण

अधीज्या दमन्या होंठ
हेत अर वैराग सूँ गढ़ी
थाँकी मरदानी बाड़ पे
माथो पटकै छा,
अबारूँ ही उग्या चाँद की किरणाँ का
टाट्‌याटूट कोहरा मॅ

गम जाती
नसासॉं छी
थाँ का पड्त्तर।

म्हँनै कांय न्हॅं सुण्यो--
झट्ट दनीक सूँ
बिखराव अर काळ को
मुकुट धार'र
मजेजण हो बैठी जिनगाणी सूँ
मूण्डो मोड़ ल्यो।
थाँकी जरूत पे
सगळो अस्तित्त सूँप'र
म्हूॅ नाव बणी
नावड़ियो भी,
तेज बहाव तांई बणगी
अर बणीं
ऊँ के तांई फलांग जाबा की जुगत।

सगळा बीत्या
सगळा न्हॅं आया
ऊँ ही एक छिन मॅं
बिसरगी म्हूँ साँच्यॉं ही
कठी माटी, कठी नाव
कठी नद्दी
कठी छै पार उतरबा हाळा
लाग्यो जश्याँ म्हूँ फगत

आखी जिनगाणी का हेत सूँ रची-पगी
एक ताती ताती गोद छूँ
स्यात् म्हूँ एक निसानो छूँ
थाँका संकळप
पूरबा हाळी
म्हूँ एक प्हैली सूँ तै दिसा की
छैकड़ली ठाम छूँ।

अणजाण्या, अणसुण्या
कश्या नुआ देस की आड़ी
खिंची चाली जा री छी म्हूँ
करोड़ूँ नच्छत्र एक दूजा ई थाम'र
घेर्‌या छा म्हँई
अँधारो-उजाळो
छिन-छिन
कामण फेर र्‌या छा
म्हारा अस्तित्त पे
आपणां असर सूँ।

तो कांई म्हूँ
कोय घनी सौरम छूँ
गीत की ल्हैर छूँ
जे व्यापगी छी
सगळा अंतरिख मँ
के आप सूँ ही अजाणी
फगत एक पुळ

जीं ने जोड़्या छा
दोय कनारा।
जगत्, ब्रह्माण्ड को
सगळो रीतोपॅण
जश्यॉं बूँद बण'र
म्हारा काळज्या पे पग धरताँ ही
अनोख हुळास मॅं
लोही सूँ भर ज्यावै छौ।
थाँ की इच्छावॉं सगळी
थाँ का संकळप
पूर जाबा पे
म्हॅई फेर
बीत चुक्या उच्छब की नांई
ईं दोगणा सूना
डीळ ईं खेंचळ कर
बद जाणो होवैगो
अंधारा मॅं एकळो।

जठी
थॉं का सुर
कदी कनसुर्‌या जश्या
सुणाई दैगा
हळाबोळ की नांई
चीर दैगा म्हारा काळज्या ईं।

तड़काव मॅं

कुण ने द्यो हेळो तड़काव मॅं
कुण को तपतो उळबो
मांसळ पौन सूॅं
एकस्यार हो
म्हारा कुॅंवाड़ पे
दे र्‌यो छै दस्तक?

हिवड़ा का ताराँ मॅं म्हारै छै
कश्या सुर को झरणाटो
थिरकै छै जे नस नस मॅं
समदर भी गरजै छौ अँधारा मॅं
च्यारूॅं म्हारै घिर आयो छो/
न्हॅं ऊँडापा की तोळ छी जीं की
न्हॅं कनारॉ-कराड़ॉ की...
के सगळो आभौ
बरसबा बरसबा जश्यो हो
बिंध्यो छो बादळा सूँ

कोय अणचीत्या
हेत का गाढ़ा मॅंडाण ने

भींच'र जकड़ ल्यो छो म्हँई
रीती सेज के सौढ़े
पसरी छी कुण की साँसां
कुण का कामणगारा होठां सूँ
तड़काव का हरसिंगार की नांई
टप-टप
झर र्‌या छा आँखर
थाँ का/
के अधफाटी
आबा हाळी भाग का?
कँवळ की सैकडूँ पाँखड़ियाँ जशी आँगळियाँ
चीर री छै म्हारो रूँओ-रूओ

•

चाँद को उजाळो

1. तळाव

कूड़ो-कर्कट, कीचड़ सूँ भर्‍यो
तळाव छूँ म्हूँ
कनारे-कनारे
धसूळाँ हाळी झाड्यॉं
घुटना तांई फाणी मॅं
धोळा झक्क नान्हा पुसप
नान्हा नान्हा मींडक्या
घोंघा अर सीप्याँ/
नान्हीं नान्ही माछलियॉं
जाणबा बेई अधीज पौन को नाचबो कूदबो भी
न्हॅं सिट्टा पावे
म्हारो सरणाटो
सौराई सूँ।

कदी कदास
बेढब पग पटक'र
घूम आवे छै एक बकवो
सावचेत ऑंख्यॉं आपणीं
टिकार्यॉं फाणी मॅं।

पॅण दिसा सूॅं दिसान् तांई फैल्या
चाँद का उजाळा!
थॉ कीं ळेखे नम्याओ छो?
कपूर झराता हाथॉ सूँ
सहला जाओ छो म्हारो सगळो डीळ
न्हॅ जाणै कश्या कामण सूॅं
म्हारा ई जाबक काळज्या पे
उकेर जाओ छो
साफ अर सलूणो
मॅडाण आपणो ही...

2. कपूर बरस र्‌यो छै

कपूर बरस र्‌यो छै
एक मैदान सूॅं दूसरा मैदान तांई
खेतॉ पे
रोही-रोही, रूॅंख की पांत पे
समदर अर नद्‌दी
ल्हैर-ल्हैर
बरस र्‌यो छै कपूर
भीज र्‌यो छै
म्हारो सगळो अस्तित्त
सौरम सूॅं।

खुल्या बालाँ पे
उणग्यारा पे, होठाँ पे
ऑख्या पे बरसे छै

देख न्हॅं पाऊँ छूँ म्हूँ
मोवणो कपूर झरै छै
म्हारा हिवड़ा पे।
भला कुण गा र्‌यो छै
सात समदर पार, परदेस मॅं
रूॅंख के पींदै, झुटपुटा मॅं

अधभीज्यो छै बरखा मॅं
कश्यो भेद घिर आयो छै च्यारूॅं मेर
शास्त्रान्‌ मॅं पसरतो
यो कुण को गीत छै
बाँसुरी सूँ खड़तो
कुण को सुर
कोय थाँ को ही तो न्हॅं?

3. इमरत घट

ऊगणी दिसा
ॲंध्यारो आपणां निराकार हाथॉं मॅं
झेल्यॉं छै इमरत घट।
टपक र्‌यो छै इमरत
बूँद बूँद
पत्तान्‌ पे
पत्तान्‌ सूॅं माटी पे
धार बण'र ब्है र्‌यो छै
भीज र्‌यो छै म्हारो घर
म्हारो चौबारो

ऊँ का ही वरण की
म्हारी सांवळी छै तर
डूब्यो छै ईं मॅ म्हारो हुळसबो
म्हारी पीड़
के सगळी रात झरती होवैगी
इमरत की धार
बीततो जातो होवैगो
मोवणो रसभर्‌यो बग़त

छानी मूनी र्‌है'र
पिरथी को करौंट बदळबो
ग्हैरी सॉसां सूॅ रूॅख पात हिलाबो
सुणाई देतो होवैगो,
सुणाई न्हॅ दे र्‌या होवैगा फगत
प़ग धरता वे सुर नमून का
जे छै
आपणीं अथिर जीवन जोत का।

सीप

लूणिया फाणी का ऊँडा ई राज मॅं
तिमिंगळ अर
ऊँ सूॅ भी बदती माछळियॉं का
खुल्या मूण्डा के सामै
हार्‌योड़ी, थक्योड़ी म्हूँ/
घिसट-घिसट'र
डोलबो-फरबो ही बद्‌यो छै
म्हारा भाग मॅं।

याद न्हॅं र्‌है परिचै बग़त को।
नद्‌दी के ऊपरै कोय ठाम
कदी कदी
दप दप करतो चमक उठे छै
एक तारो कीं लेखे
लाखूॅं तारान्‌ के बीचै
बस, म्हॅंई
ताकतो र्‌है छै ऊ
के कदी कदी म्हॅूं ऊँ के तांई
आपणो समझ ल्यूँ छूँ...
मनड़ा की सगळी मून मनवारां

ऊँ के तांई सूँप द्यूँ छूँ।

सात समदर पार सूँ आवाज आवै छै
चाल उठ, चाल'र झाँक आभै आड़ी
बीजळी चमकै छै म्हारे भीतरै
हथेळी सूँ भी नान्हा
पिद्दी सा डीळ को
काळज्यो जाग ज्या छै
होंठ खुल ज्या छै...
दूरै...नरी दूरै
आभै सूँ उतरो छो
काणै कांई छो
अलेखूँ लाखीणो
रसघोळ
बूँद, के बिन्दू/
सिरजबा को सुपनो
सून भी डगमगा र्‌यो छो
मुळक र्‌या छा पिरथी-आभौ
अहा! फूठरा ओंकारा में
हिंदळौटा भर र्‌यो छो
सगलो समदर।

नीड़ै सूँ भी नीड़ै
कोय दूसरा जगत् सूँ आई
बरखा की एक बूँद
आ गिरै छै

म्हारा होठॉं पे
रूमॉंच का हर्याळा रोही की गोद मॅं
बद'र छिन मॅं म्हारो मोट्यारपॅणो
संत सरीखो
आपणै भीतरै ही गम जावे छै
आंगूच्या छिन।

जे अधिकार कोय न्हॅ

1

म्हारो सूना जश्यो डीळ
आभै सूॅं झरता
रंगान् को बहाव
थॉंको हेत
सॉंचो छै जे
तो डरपबो कश्यो?

आधो हेत
आधो डरप
रूॅंओ रूॅंओ धूजै छै म्हारो,
कश्या नुआ भेद की ताणी
बांध्यॉं रखाणै छै
फेर नाळा करदे छै...

जे म्हॉंके बीचै
कोय कोय न्हॅ
थैं अर म्हूॅं/
दूसरो कोय न्हॅ
कॉंई भी न्हॅ

तो फेर कुण सूँ
डरपबो करूँ छूँ म्हूँ दन रात
ई नांगतड़ांगा डरप को कुहासो
न्हँ जाणै कठी बरसै छै/
म्हारो हियो,
केस, मूण्डो, ढंढेर
भीजता जावे छै।

2

ऊ डरप म्हारे सामै ला पटकै छै
थाँ का न्हँ होबा का
वे मारकणा दन
जद सूरज, चाँद, बरखा अर पौन
जाबो करै छा आपणीं गैळ
म्हूँ घिसटबो करै छी।
न्हँ रीतबा हाळा रीतापॅण ईं ताकती
बीजळी की कूँध
अर इंद्रधनख की आड़ी
न्हँ झाँकू
धारदार पौन की आड़ी,
हाथ न्हँ बढ़ाऊँ
आस को बूँद भर उजास
हैळो दे छै
तो मूँडो लुका'र क्है द्यूँ छूँ
''न्हँ... ।''

3

थॉकी गोद में होती बग़तॉ
ऊण्डो न्हॅं होबो भी
गरज उठे छै
खितिज पे
कुण को धूॅंधळो हाथ
सून ई हुळसा'र
क्है दे छै–
न्हॅं...
खो देबा को डरप

के डरप खो जाबा को
कोय ठाम सूॅं दौड़्यो आवै छै
कादा सूॅं बणी दुनिया के भीतरै सूॅं
लोही सनी रागिनी
डमस
तसाई छै म्हारी चीख
खुल जावे छै
तो कांई म्हूॅं
मिट जाबा का गुण पे
सगळो अधिकार चाह्वूॅं छूॅं?

4

तरक बिना नपज्या
ईं अकारज डरप ईं
म्हूॅं कश्या मारूॅं

असफल ख्यातॉ का सिलसिला ई
कश्यॉ तोड़ूँ!
डरप सूँ लगैटगै मर्‌या सा
आपणां डीळ सूँ, चेत सूँ
सगळी हूँस ई निचो'र
थाँ ई म्हूँ भींच्यॉ रखाणूँ छूँ
फ्हैली सूँ बैसी डांस भर'र
बाँथ मँ,
थाँ का चंदनरूँख जश्या डीळ ईं
बासक की नांई
भींच्यॉ रखाणूँ छूँ...
भींच्यॉ रखाणूँ छूँ/
आपणो हाल
बिसरबो चाह्वूँ छूँ,
बिसर जावूँगी सगळी,
कमियाँ
नाजोगोपॅण

पॅण ओळ्यूँ आवे छै
वाँ मॅ सूँ ज्यादातर की,
तो कांई म्हूँ
रेत का वरण की छूँ
रेत सूँ गढ़ी बाथ सूँ
बिना दासा का प्रीतम
थाँ के तॉई ही
भींच्यॉ रखाणबा बेई

जी जान लगा द्यूँ छूँ?

कुण को सुर, कुण को पड़बिम्ब
कुण-कुण के तांई
विदा करै छै,
कुण-कुण सूँ
दूरै चल्यो जावै छै
जूणा काँच मॅं
धूँधळा दरसावा सा कदी
कदी टूट्या म्हैलड़ा की
टूकड़े-टूकड़े गूँज सा
सुणाई दे छै
दिखाई दे छै...सुणाई दे छै।

यो कश्या भेद को घेरो छै
थाँ सूँ नाळी
र्‌हैबा न्हॅं दे म्हँई
पॅण थाँ का
छनीक रूपाळा डीळ सूँ जुड़'र
र्‌हैती बगतॉं

म्हॅंई खींच ले छै...
नांगतगाणी दिसा का ठेठ मॅं झिलमिलाता
सबसूँ चोखा डीळहीणपॅणा की आड़ी
सैण सूँ बता दे छै
म्हूँ ताकती र्‌हूँ छूँ सुध बिसर'र

थॉ हो जावो छो
माटी अर आभौ
अर फेर
फाणी अर अगन
रूप अर सौरम।

ऊँ बगत ही
म्हारा रगत मॅ
जलम ले छै एक अनुभौ
ऊँ को डीळ न्हँ
कशी भी कोय मॉग न्हॅ
ऊँ अनुभौ सूँ
धुप्यो-धुप्यो अमरोस म्हारो
थॉ का सबसूँ दूरै का साथ ईं भी
भींच ले छै
फेर
न्हॅ मिटबा हाळा
थॉ का रीतापॅण ईं
पूजबो करै छै।

पलातक

थैं न्हॅ बावड़ोगा
न्हॅ झाँकोगा
म्हारी आँख्यॉ मॅं...
थाँ का अगाडी बदबा का गैला मॅं
बळबो करै छी जै कदी
जोत बण'र।

पुराण, ख्यात, समाज
प्हैचाणै छै
रीत पलातक की/
न्हॅ माँगी थॉ ने बिदा
आभै मांही
गम्या तारा की नांई
नद्‌दी में
गम्या तारा का
गम्या पड़बिम्ब जश्या
ओझळ हो ग्या।
चाह्‌यो छो स्यात्
तोरण सजै
पुसपॉ का हार की नांई

आसावां म्हारी
जीबा जीबा जशी हो
झड़ जावै छै ळगोळग मुरझा'र।
पॅण
रोही की लाई की माला जश्यो छै
हिवड़ो थाँको
सगळी ठकुरसुहाती की आड़ मॅ
भाप रूॅध्यो सो सुर थाँको
कतनो मीठो छै!

सांय-सांय करतो पौन
टकरावै छै सून सूँ
कुण को अट्टहास चीर डालै छै
काळज्या को टूकड़ो
चकवाई सी सॉसां अर लोही
जम जावै छै,
धातवाँ सी पलकॉ पे।

कॉय थैं
औळे-दौळे लुक्या टाबर छो
हैळो देबा पे
न्हॅ मिलै पडुत्तर थॉ सूँ?
के थैं छो
कोय नाळा बेधाता
जे जगती की लेर फैंटे छै
प्रलै के तांई?

के सिरजवा का बग़त की
घनेर हूँस थाँकी
फाट चुकी होवे छै
संघार की बग़तॉं!

सरणाटा में टूट जावै छै
रूँख-पौधा-डूँगर
टूट'र गिर पड़ै छै आभौ
पिरथी पे
न्हॅं जाणै कुण एकलो
टटोल र्‌यो छै फगत,
पड़बिम्ब के तांई पकड़बा बेई
तैरबो करै छै कुआसा मॅं।

पाबा अर बरजबा का संधिकाळ मॅं

लोभ की बलिवेदी पे अधीज्यो
भाग ज्या छै कुण अठी सूँ?
घर सूँ, के गुफा सूँ,
साँच सूँ, के ओळ्यूँ सूँ
मुगति माँगे छै
हेत सूँ, के जकड़ाव सूँ?
थैं तो भागता फरो छो
आपूँआप सूँ
मुगति माँगो छो
आपणी ही स्रिस्टी सूँ,

ख्यात सूँ।

पलातक!
कठी भी रृहो
जुद्ध भोम मॅ
के सिंघासन पे
के कोय बायर की बाँथ मॅ,
थॉ की गैल मॅ
बणी रृहै छाँवळी
बरसबो करै पुसप हमेस।

(पलातक : जे पलायन कर ग्यो)

ऊजळो गुदळको

डूँगर की लोठी छाँवळी
घिर्‌याबा पे,
मॉझळ रात घुँसाळा में
हौलै सूँ हालबा पे,
पाँखा की तातास टूट जाबा पे,
कठी भी कोय न्हॅ होबा पे
न्हॅ जाणै कुण दीख जावै छै
असवाड़े-पसवाड़े?

टूक टूक हो
टूटबो करै छै
ऊॅ को अस्तित्त, मूण्डै
घुळ जावै छै ऊँ का सुर
ऊॅ का होबा को ऐसास
सॉच्यॉ ही न्हॅ कर पाऊँ म्हूँ
डीळ उघाड़्यो सोरायोपॅण,
कांय तू ऊ ही छै
वजर बॅण, सरणाटो बॅण
झर का धपळका बॅण
लोही की

गति बॅण, छंद बॅण
बावड़्यावै छै म्हारे कनै।

न्हॅ जाणै कुण
हाथ बदावै छै, रूक जावै छै
बरखा का धुॅंधळका मॅ
भीज'र
पिरथी ईं
जगावै छै नींदड़ली सूँ
क्है छै...
कांई कांई क्है छै कानां मॅ ऊँ के...
अणधुपी मोरी जशी
बास आबा लाग गी डीळ सूँ
बास आबा लाग गी
शरतहीण समरपॅण सूँ
मरदमी सूँ
लोकाचार सूँ
मरदानगी की हेठी सूँ
या बास
पसर जावैगी ईं बेर
सगळा परिवेस मॅ
म्हारे छैकड़ली बग़तॉ।

फेरूँ भी क्वॉड़ खुल्या रखाणूॅ छूँ म्हूॅ
पड़द खिसका'र थाम्यॉ रखाणूॅ छूँ
रातड़ली ईं

मुगत कर द्यूँ छूँ
ऊँ का परिचै सूँ
दीठ डालूँ छूँ दूरै तांई
लगैटगै
असंभौ की आड़ी।

स्यात्
कांई चमक्यावै सामै
सबसूँ छैकड़ला सुपनां का
ऊजळा गुदळका मँ।

समझ न्हँ पाऊँ साँच-झूँठ

समझ न्हँ पाऊँ साँच-झूँठ।

आधा सुपनां सूँ जाग'र
टटोलबा लागूँ छूँ डमस
आळो लागै छै/
रगत लाग ज्या छै सारी आंगळियाँ मँ।

भाँत-भतीला मारक असला सूँ सिणगारी,
अचीती होणी का
अमरोस ई
रोक ल्यूँ छूँ डावा हाथ सूँ

माटी के पींदै जड़ाँ की नांई
उलझ जाऊं छूँ बाँथ भरबा बेई
पँण
'आपणो' न्हँ व्है पाऊँ छूँ माटी के तांई।

कतना सवाल छै
साँच-झूँठ का
अबखाई का, धूजबा का

दे द्यो, दे द्यो की चीख
म्हॅं तो राजकॅवरी छूँ
ऊजळी कलम का खाण्डा सूँ
चीर डालूँ छूँ सरणाटा ईं
पड़त-पड़त ईं खोल'र
चेत खैंच ल्यूँगी/सोचूँ छूँ

पडुत्तर ई बात को
न्हॅं रीतबा हाळो भण्डार सबदॉं को
कठी होवे छै? कीं ऊण्डापॅण मॅं?
सांवळी सूँ झाड़ ल्यूँ छूँ
सगळा चॉंदण्या पुसप
जूड़ा के पींदे सूँ
खोळ द्यूँ छूँ कोय झर,
कंगन उतार, सांवळी खोल'र
फॉक द्यूँ छूँ
ऊँदरान् का बेजक्या सूँ भर्‌या
कमरा मॅं,
बग़त ई
हैळो दे दे'र क्हॅंू छॅं
जा, कुतर ले जा'र
सगळी हर्‌याळी
उणग्यारा का उपजाऊपॅण सूँ
म्हॅं तो अब
पडुत्तर हेरूॅं छूँ,
सगळा दन, सगळी रात

सून का एक खूण्या मॅ हेरूॅं छूँ/
गंगाजी की बाट ई झुका ल्यूँ छूँ
हाथ डालूँ छूँ
बादळ का खळीया मॅ
हेळा द्यूँ छूँ
आ, पकड़ाई आ जा,
कांई क्हैबा की सोच मॅ
डबडबायो आभौ
बरसबा लागै छै।

रीती मूरत

बारी सूँ
ओळखता
रूँखड़ान ई
झिड़कताँ सताँ बोली
ऊँ दन—
चालो सरको
झाँक काँई र्‌या छो
घणीं अबखाई सूँ खाडूँ छूँ रातड़ली
काळज्या पे भाटो मेल्याँ, घुटन सहताँ
काश थैं
बाँध लेता थोड़ो बायरो
डाळ अर पात का जाळ मँ।

कीं लेखे?
के कांई पीड़ छै थाँ ई
अब खुल'र क्है द्यूँगी म्हूँ
न्हँ जाणै कुण माँड ग्यो
दो ओळ्याँ
म्हारी पलकाँ पे
के म्हूँ घडूँगी

एक जीवती मूरत
सून का औरस सूँ रस निचो'र
डीळ दे'र, चाम दे'र
सबदान् की ऊँडी नींदड़ली तोड़
वाँई चालतो कर'र
अलेखूँ अबखायाँ बींध'र
म्हूँ ही बदा द्यूँगी सोनार औसर
आपणो लोही उँडेलती होवूँगी
दळदळ मँ।

काळज्या मँ
अतनो बड़ो काँच मेल'र
लाखूँ भाव भर्‍याँ
छाँवळ्याँ ई अंगेज'र
अतनी लांबी गैल चालती होवूँगी।

गाढ़

अपणापो
फ्हैर्‌याॅ होवे छै
जाबक मखमली पौसाक।
साँप छतरी खड़्या काठ का
ठेंगुर जश्यो
लटक्यो होवे छै नाड़ मॅ
ऊँदरा का पींजड़ा मॅ
तड़फड़ै छै ऊॅदरो।

नैवेद
बिखर्‌या होवे छै अठी-उठी
नसाॅसां बींध दे छै माटी ईं
हाथ बढ़ा'र घिसटताॅ-सताँ भी
न्हॅ पूग पाऊँ छूँ म्हूँ
देवता का चरणान् मॅ।
स्यात्
न्हॅ पूग्यो जावै कदी कोय ठाम
कोय सुपनां मॅ।

चीरबो करै छै

आखी रात
संजोग को चाकू
सरणाटा ईं,
डरावणा मनख सूँ संभोग में
बळ जावे छै डीळ
उगर की लैराँ गळेडू
टप-टप झरती बग़ताँ
सूरज ऑथबा सूँ सूरज उगबा तांई
उठायाँ र्‌हूँ छूँ बॉथ
साँच झूठ की बाड़ पे।

कदी कदास
न्हॅ जाणै कठी सूँ
उड़'र आ जावै छै
रसीला सबदान् को दूळको
बैठ जावै छै छाने सूँ
पाँख दबायाँ
होंठ, ऑख, कान, काळज्यो
सगळी राती हो आऊँ छूँ म्हूँ।

भर भर'र चळू
हेत उँडेलू छूँ बळती लाई में
होंठ न्हॅ धूजे, न्हॅ खुले
भर्‌यो कळश्यो टूट जावे छै
रेत का धोरा पे।

नरा हाथ छै जातना का
राता, नीळा, धोळा, घणकरा...
झक्क ताळाब की ल्हैरॉ जशी
अधप्कैचाणी दो आँख्यॉ
ताकै छै
तड़काव का
न्हॅ जाणै कश्या खूण्या सूँ?

उमर सूँ
छनीक सी रेत खड़ जाबा पे
गिर पड़ै छै समदर
डूँगर की पैलाडी सूँ
सैळो बायरो फलांगतो आवै छै
भींच ले छै म्हॅई

गाढ़ सूँ।
धूळ भर्‌या बादळ की दीपदानी पे
दिवळो जो'र मेल द्यूँ म्हॅू
क्हो छो—
अबार सूँ?

खाल तड़कै

फाणी पे फाणी
झूम उठ्यो छै मदगाळा की नांई
आभै मांय
न्हॅ तावड़ो छै, न्हॅ बादळी, न्हॅ बंबूळ्यो
समचौ तांई न्हॅ
कोय को।

जे म्हॅू नाव छूँ
जे म्हॅू नावड़ियो भी छूँ
जे म्हॅू जाबक साधन छूँ
मनचीत्या को,
खाल जे मिल जाती गैल मुकाम की
आबा हाळो तड़काव
म्हारा सपनां सूँ, कल्पना सूँ
साधना सूँ
नाळो हो जावैगो साँच्यॉ ही
कश्याँ मिलँगी
म्हॅू ऊँ सूँ?

तड़कैं सीस उठायाँ होवैगा के न्हॅ

सूरज,
आखी रात फाणी की चट्टान पे
थेई थेई नांगो
नाचतो-डरपोक
वैतरणी की छांवळी मॅं
जे छुप्यो थको होवैगो,
जे सुपनॉं की नमळी जड़ॉं
थम जावैगी रेतीळा पसराव मॅं
आँख्यॉं की रंगीन सीपी सूँ
लुढ़कगी होवैगी कल्पना
न्हॅं जाणै कतना भुनगा
समझ भरी गुनगुनाहट करताँ

आभौ कँपाता
बावड़ र्‌या होवेगा
हटवाड़ो निपटा'र बगीचा मॅं।
ऊदी लाग्या
आस का संदूक सूँ
खड़ र्‌या होवैगा उन्पचास पौन...
बाण्या की आँगळ्यॉं की फाँक सूँ
पड़'र लौटतो होवैगो धूळ में
म्हारो सबद जड़्यो रतनहार।

एक तारो कूद'र फाणी मॅं
घुळ'र मिल जावैगो
मॅंडरावेगो दिसान् का घेरा मॅं

एकळो पाँखी,
न्हँ जाणै कीं आड़ी सूँ
सुणाई देतो होवैगो
सगळी बाताँ गम जाबा जश्यो हेळो
म्हारो नांव तो मिट चुक्यो होवैगो
कदी को
पतवार झाड़-पौंछ'र
ले ग्यो होवैगो एक एक कर'र
फाणी की चट्टान सूँ।
पॅण म्हूँ ऊबी र्‌हूँगी अश्याँ ही
ल्हैरों पे वैतरणी
मरमर का पाँख फेला'र
ब्हैती होवैगी
जश्याँ होवे राजहंसिनी!

खाल तड़काव की लैराँ
जश्याँ भी भेंटूँ म्हूँ
राजरानी,
के मँगती का वेस मॅं
देणो ही होवैगो पॅण म्हँई
जे न्हँ दे पाई थाँ ईं
खाल तड़कै।

जाणो होवैगो

सैं सूँ मीठो असफलपॅण
दे ग्यो नूॅतो खाल म्हॅई...

माटी तोड़'र
खड़ आई छै कूंपळ आम्बा की
उफन'र ब्है री छै
छणीक मोवणी अनुगूँज
सुराँ सूँ एक मूरत
गढ़ी जा री छै तो
अचाणचक हो जावै छै टूक टूक
अणु-अणु सुर
तरै छै, डूबै-उतरावै छै
हिचकोळा खाता म्हारा रग़त बहाव मॅं।

अनमना हो जाबा
अर न्हॅं हो जाबा की थाळाबेळी का
उड़ा चुकी छूँ चाळा
न्हॅं जाणै कतनी बेर
श्हैद चाट्यो छै
रसभीजी हथेळी सूँ

फाँक न्हॅं पाई सौरम
कामण कामण क्है चिल्लाई छूँ
कदी आभै सूँ तो
कदी बग़त सूँ टेको लगा'र
सगळी रात खाड़ी छै।

ई लेखे
हाँ—न्हॅं ळाजिम छै,
जाबो-न्हॅं जाबो
एकस्यार का छै म्हारै बेई,
छिन मॅं

चौदह भुवन में बखरी
म्हॅं, आँगूचा छिन
सिमट्याई
एक ही धूजणी मॅं।

फेरूँ भी
ऊँ का हेळो देबा पे
मिट जावे छै गेल
खाल तांई जीं पे
चालती आ री छी म्हॅं,
मिट जावे छै
सनि-चॉद विखयोग मॅं उळझी
म्हारा भाग की औळ्यॉं,
पड़ जावै छै

मनसरावती कामयाबी को किरीट।
कॉई पडुत्तर दूँगी, पूछो छो?
अकबक कठी
हाड़क्यॉ का भूखा चाँदी का जेवर
रफू करी थकी लोही-लोथ की रेसमी साड़ी ईं
माँजबा-सॅवारबा ताँई की भी
अकबक कोय न्हॅ।

बस, जाणो होवैगो म्हॅई बेगां ही।

पूरोपॅण

बिलाँत भर बग़त ई पूरोपॅण देबा बेई
काट चुकी छूँ आपणां नाप सूँ
सूरज, चाँद, आभौ, माटी,
रूँख, बेलाँ, नद्दी, पौन ई।

छैकड़ली धूजणीं
ठ्हैरबा सूँ प्हैली
उठायाॅ छूँ आँगळी पे
सुपनां का हमळ ई,
घर के पिछाड़ी पीपळ की
सैं सूँ ऊपरली डाळ पे
टाॅक द्या छै म्हॅनै पिन सूँ
दो-च्यार सितारा
एक ही सबद में सरी
क्है चुकी छूँ 'अलविदा'
चाली आई दूरै थाँ सूँ।

एक पाक्यो थक्यो पूरोपॅण
टटोलताॅ-टटोलताॅ
उठा लाई कोय ठाम सूँ

एक सुवाद
दुख का भारा सूँ
नम्याया डैनॉ ई

थपकी दे'र धकेल द्यो
आभै सूँ आभै तांई/
कुलाँचा भरबा बेई।

हर मनख के ताँई
एक ही साँचा में ढाल द्यो
म्हारा आपणां ही साँचा में।
जाबक अडीळ्यो
वरणौ ळे'र
सजा चुकी छूँ कविता
कतनो मूँडो फुलायो छै,
रूसी भी छूँ
जमी छूँ ओसरड़ा की नांई
माटी पे
माँड्या छै उपजाऊपॅण का मॅडाण,
सबदाँ मॅ जड़ाँ आई के न्हॅं/
हेर री छूँ।

सियाही की कलम ले
कर आई दस्तखत
सुरग की पलकाँ पे,
काँई मिल्यो के न्हॅं

न्हँ राख्यो-लेखो-जोखो कदी।

काँय न्हँ काँय तो
चाहूँ छूँ म्हूँ अवसकर
न्हँ, नाळे सूँ
मत सोचो काँय भी/
मत करो कलपना
पाक्यो थक्यो पूरोपॅण कोय न्हँ
अठी कठी भी।

जे म्हँने काँय चाह्यो छै
पायो भी छै,
टूक टूक सुवादाँ मँ
कविता का मून हिस्सान् मँ
सपनां का हमळ का जीवता र्हैबा मँ।

म्हूँ ही
जुटी छूँ ऊँ ई भरबा बेई।

सुपनाँ बनाँ

कोयल दीख न्हँ री
पॅण कूक ऊँ की
कश्याँ उळ्याई
रेल का छुक छुक थकेला ई
तोड़ती-फोड़ती,
म्हँने तो
लुका ल्यो आपूँआप ई।

मेट नांख्यो अस्तित्त
मँड्यो तो छो नांव बादळाँ पे
पिघल'र ब्है ग्या नद्दी मॅं बादळ...

कुण ने आँक दी
रूँख, पात, डूँगर
हवेळी की
बारी पे
थाँ की ओळ्यूँ
ऊबी हो जावे छै आ'र
ठीक थॉकी नांई उठाव ल्याँ
थाँ छो ओळ्यूँ

के साम्प्रत
के तीन काल को कौल
समझ न्हँ पाऊँ।

स्वाल करती आँगळी सूँ
ॲध्यारा को घूँघटो उठायाँ राखूँ छूँ म्हूँ
जद सगळा सो जावे छै
कोय अजाण्या देस की पौन
म्हारी गैल रोके छै,
सेज सूँ जूझती
हेर री छूँ म्हूँ
कदी पा लेती, खो देती, पा लेती
बेर-बेर
भागोट्या तारा ईं छू लेती।
भौवाँ बीचै एक ओळाई
तकदीर म्हारी
आपणाँ सैळा गाठा अमरोस सूँ
जश्याँ एक कीड़ो बना द्यो म्हँई
मंतर पढ़ी धूळ ईं फाँक'र...
सद्दी डोर का टूकडा सूँ
बाँध द्या
हाथ-पग म्हारा
जश्याँ
आज म्हूँ कोय न्हँ
न्हँ कदी छी...।

ई बड़बोलापॅण पे
आवे छै हाँसी म्हँई।
म्हारे पगाँ के पीदै तो
घास छै, फाणी छै,
भला म्हूँ कश्यॉ न्हँ होती?
म्हारी साँवळी की सळौटां मँ
ल्हैरॉ महानद्दी की
म्हारी कंठीमाल मॅ
एकूँएक सितारो
म्हारा गीतान् मॅ
हेत छै, गळेडू छै
भलॉ म्हूँ दीखती कश्याँ न्हँ?

कतनी थाळाबेळी र्‌है छै
फूठरापॅण की आड़ मॅ
म्हँई हाँसी आवे छै...
आपणां अश्याँ
छानै सूँ मिट जाबा के पाछै ही
परस करूँ छूँ भागोट्या तारा को
बनाँ नींदड़ळी, बनाँ सुपनॉ के...।

थाँ ई पा लेबा को अरथ

वाँ को क्हैबो छै
म्हूँ पा चुकी छूँ
काँई साँच्याँ ही
म्हूँ पा चुकी छूँ थाँ ई?

थाँ ई पा लेबा को अरथ छै
ऊँ पार जाबो
डीळ ई
ढाँप लेबो भेद सूँ
आत्मा सूँ पौंछ डालबो
सगळी धूँध
बेला की माला सूँ सजा लेबो
आपणै भीतर के तांई।

साँच्याँ ही
म्हूँ डाँकबा लागी छूँ पंक्त्या
एक एक कर'र सौराई सूँ
अगाड़ी का/के ऊपरला
उतरी भी छूँ पंक्त्या
पिछाड़ी का/के नीचळा,

समझ न्हॅ सकी
जतन भी न्हॅ कर्‌यो समझबा को
कारण कोय काळम्या को,
पतियारा ही पतियारा मॅ
कश्यॉ बीतगी खॉंय-खॉंय
दोफ्हैरी म्हारी।

थॉई छनीक परस करबा बेई
नरा चौरायॉं पे

ऊबी री छूँ जेज तांई,
स्हैन करी छै छिछकार्‌यॉ
स्हैना पड़्या छै प्रहार
म्हैड़लो अर डीळ दोन्यूॅ
दपदपा'र बल उठ्‌यॉं पे भी
जीवतो राख्यो छै आपणो तांई।

सगळा आभै मॅ
भाग आई एकळी
बादळॉं ई चीर डाल्यो नखान्‌ सूँ
सितारा ई लॉकेट बणा'र ळटकबो करी आप
अरथ का गळा मॅ।

अरथ का गळा मॅ
ळटकबा को अरथ छै
सुपनॉ देखबो

सुपनाँ को साँच समझबो
अधफाटी भाग मॅ
आपणीं
सिसकार्‌यॉ भरी छाती ई स्हैळाबो।

कॉंई देख'र
न्हॅ जाणै कॉंई बॉंच'र
कॉंई-कॉंई सुण'र
मान बैठ्या छै वे के
पा चुकी छूँ म्हूँ थाँ ई।

कोय जाणै के न्हॅ जाणै

म्हूँ तो जाणूॅ छूँ के
थॉ ई पा लेबा को अरथ छै
सांतरी धूजण
सबद अर अरथ खो देबो
लोही सूॅ सन्या काळज्या ई
फेंक देबो सड़क पे/
थॉ ई पा लेबा को अरथ छै
पूरी चुप्पी/
मूण्डो कतई बंद।

कुण छै ऊँ पार

कुण छै ऊँ पार?
ळगौळग अंध्यारा सूँ लदी
रेंगती पौन
साँस लेबो दुखदाई अठी।

तेज बहाव
म्हारा काळज्या को
ऊँडापा मॅ मार करै छै
काटै छै
लोहो अतनो के
हाथ-पग भण्ड्या छै सगळा।

टूट'र गिर पड्यो माटी पे
कवि को सुपनों
धूळ मॅ मिल्यो भयानक।
फेरूँ भी बच्यो छै तेज...
बच्यो होवैगो।
धूळ मॅ
एक नान्हो कण
खिल्यो छै जीवतो, झिलमिलातो

क्हो छै के ऊ तेज छै म्हारो...
हो सकै छै।

ऊँ तेज सूँ
काँय जाग जावैगो अचाणचक
ळगै-टगै दस बरस प्हैली
मर चुक्यो म्हारो प्रेमी?

उबल्या अण्डा का दोय हिस्सा जशी
आँख्याँ मँ ऊँ
की
फेल चुक्या होवैगा अनोखा सुपनाँ...
ऊँ तेज सूँ
काँई राता पड़ जावैगा रूँख अर पात
पिघल'र ब्है जावैगा गेल अर घाट
पसर जावैगी कड़वी मुळक
आभै का एक खूण्या सूँ दूजा खूण्या ताँई?
काँई फाट जावैगो
जाबक डमरू
ऊँ तेज सूँ?

म्हूँ हाथ बदा द्यूँगी।
कुण छै ऊँ पार?
घुप्प आळो अंध्यारो
आंठ न्हँ पाऊँ छूँ कांई?

दिवळोघर

ओळ्यूँ डीळहाळी होती तो
हाथूँहाथ धकिया'र
हटा देती ऊँ के तांई
सामै सूँ म्हूं।

सामै आ ऊबी हो जावै छै वा
मोवणी दीठ की दूधांधार
रस की सैकडूँ धारा बहा'र
डुबो दे छै
म्हारो अस्तित्त।

भूत, भविष्य अर वर्तमान
न्हॅं होवे कोय की
ओळखाण कोय,
कोय बहाव
कतना कडुआ बोल, रगतपात
हळाबोळ...

पुसप का रोही का आखतापॅण मॅ
उत्कंठा भर्‌यो संघर्ष
सूखी जड़ाँ की

मुळकाहट भरी नफा-नुकसान की बाताँ
कतना नांव, कतना दिखावा
चमचागिरी का सिंघासन पे
म्हारो महाराणीपॅण/
कोय की कोई खासियत न्हॅ होवे।
फगत
ऊँ रीढ़ की
पतळी रसधार सूँ
मूर्छित म्हॅू
होस खो बैठूँ छूँ।

बगत बण जावै छै
पाखाणी पखेरू
जड़ाँ धूज उठे छै
माटी के तळे
डूँगर के पीदै
दोब पे
तड़काव का ओसरड़ा जशी
ढुळमुळ होवे छै पिरथी...
म्हॅू जीती-मरती
लूँ छूँ फेरूँ जनम
न्हॅ जाणे कतनी बेर...।

कशी बरखा अर गळेडू
अर सबदाँ का बहाव मॅ
तिरबो करूँ छँ म्हॅू
तिरबो करूँ छूँ।

दस्तखत

नींदड़ली, के मौत
कश्यो पंक्त्यो छै यो म्हैड़ला को
के एक छिन में यो
भोग-अभोग जिनगाणी अर मरण को?

ईं घड़ी म्हूँ
पाताळ मॅ छूँ, सुरग मॅ छूँ
छिन-छिन व्याप जाऊँ छूँ
बीजळी की चाल जशी
उजाळा की ल्हैर जशी
कॅवळजड़ का गूदा मॅ
धूजणी जशी म्हूँ,
आभै में बजर बण'र हैलो दूँ छूँ
गुफा के भीतरै
घिर्‌यो अँध्यारो छूँ
ठेठ चोटी पे
उजाळा को उत्स बण'र
फूट पड़ूँ छूँ।

कठी छूँ म्हूँ, मत पूछो

कठी छूँ म्हूँ, ऊँ की तै दिसा
न्हॅ छै कोय...

सुख-दुख एक बिन्दु मॅ
दाणो बॅण जार्यों पे
डीळ सून हो जायाँ पे
पौन ईं डीळ मिल जायाँ पे
आकळ-बाकळ नद्दी
कराड़ाँ मॅ थम जायाँ पे
कोय आघात कदी

सांभळ न्हॅ होयाँ पे
थाँ म्हॉ सगळा बाँध्याँ पाछै,
सगळा मुगत कर्याँ पे
गम जावे छै तै होबो
सैं सूँ बड़ो नमून घिर्यावै छै
गम जावै छै उच्चारबो
चंपा का पुसप का पराग सूँ पुत्यो
थाँ का काळज्या को सुर बाजै छै अठी।
बैमारी, जातना, जखम का
दोहराव के बीचै
गुनगुनाती कवितावाँ
बातँ करै छै,
नुआ नुआ पवित्तर अरथ
म्हारा रग़तकण मॅ माँडे छै
फेर थाँ का काळज्या का

घूँसला में म्हूँ
एक धोळी चिड़िया/
ओझाको आयाँ पाछै
थाँ गंगा जी की बाट बण'र
आभै ईं
एक सिरा सूँ दूजा सिरा ताँई
जोड़ देबा पे
ओसरड़ा की आँख्या/म्हूँ
ठ्हैरी र्‌हूँ छूँ
पाँखड़ियाँ का पोर पे।
म्हूँ फेर बदल जाऊँ छूँ...
सून बण जाऊँ छूँ...
सून सूँ डीळ पाऊँ छूँ
काळसरप सूँ डस्यो जाबो
धरम कोय न्हँ ऊँ डीळ को
ऊ डीळ
नच्छत्र की आँगळी का पोर
की नांई ऊजळो
पुसप बरखा की नांई
बिखर ज्या छै पिरथी पे।

रतनपूरया म्हारा गरभ की
नरी इच्छावाँ, संकळप
एक ही तेज बण'र
जिनगाणी पा जाबा पे
आप ही वा जूण बण

म्हूँ फेरूँ ऊँ जूण की
मायड़ बण्याँ पे,
चळू भर माटी का पेट मँ
एक कटी डाळ मॅं
उग्याया गीत
रसभर्‌या डीळ के भीतरै
नान्हा लोही लोथ को धड़कबो/
सगळी ठाम
सगळा जीवताँ का मायड़पॅणा मॅं
म्हूँ दस्तखत करूँ छूँ।

सिंघासन

सिंघासन रीतो र्‌यो
रूक ग्या वे लोग
पंक्त्यॉ के तळै।

सिंघासन बत्तीसी की
न्हॅ सूझबा हाळी फूतळ्याँ
स्वाल न्हॅ कर सकै उठी...
ऊँ को सोवणो उणग्यारो
डूँगर सी छाती
जांघॉ की भंगमा
सुर अर काळम्या की
कलपना करबो ही छै बीचै ऊबो होबो...

राजकँवर थैं तो रूक ग्या
ई सिंघासन की
हीरा जड़ी कारीगरी
थाँ के बेई छै...
आओ, बिराजो।
यो साँच छै के सिंघासन बळ र्‌यो छै
लालच अर झूँठ के ताँई
भळस देबा हाळी लाई छै

पॅण डरपो मत,
ओळावो मत बणाओ
छिन मॅ धोळी, छिन मॅ काळी
न्हॅ पड़ जावै थॉका उणग्यारा की दमक
राजकँवर,
सिंघासन छै जूझाराँ को।

अभिसेक मॅ, हेत मॅ
अधिकार कोय न्हॅ डरपोक मनख को।

साँच-झूठ, न्याव-अन्याव भर्‌या
स्वाल करो आप से
बळबो-भीगबो छै एक सरीखो
जीं डीळ को
सांभळ ल्यो ऊॅ के तांई।

बत्तीस बेर न्हॅ
हजारूॅ बेर धरो हाथ
हिवड़ा पे
छुवो ऊँ का उच्चारण
नांगतड़ांगी कर दो बिलासिता
राजपथ पे
हिवड़ा को, बुद्धि को हाथ पकड़ो
डमस की पौसाक
उतार दो, भला मनख
आओ बिराजो
सिंघासन पे।

चाह्बो

बूँद भर चाह्बो
सांभळबाई ऊँ दन
त्यार न्हॅं होयो आभौ
धसड़गी माटी
झड़ ग्या हर्‌या पात
रूँखड़ान सूँ
सिट्‌टाया पॉखियाँ का दूलका
उड़ ग्या कोय ठाम,
समदर भी राजी न्हॅं होयो
नकार द्यो ऊँ नॅं...
गरज उठ्‌या लाखूँ हत्यारा
लाखूँ चाकू-छुरा...

अर आज आखी भींत पे छै
धातवाँ सूँ बणीं चड़ीयान् की बाताँ
प्लास्टिक का डाळ-पात की हरियाळी
जठी अरथ छै जाबक
बेसरम स्वारथ
नप्यो-तुल्यो लेबो-देबो
उठी छै हळाबोळ
चाहना, चाहबा को...

फैंक्यो न्हॅ जावै

काँय भी फैंक'र न्हॅ जायो जावै
अठी ताँई के
मोती खाड़'र
तोड़ी होई सीप भी।

हाथ पकड़'र लैराँ चालती
राजकँवरी ई छोड'र,
न्हॅ जायो जावै रोही आड़ी
आधा गाबा मॅ
न्हॅ तो करनो पड़ै छै प्रायस्चित
मूण्डो छिपा'र तबेळा मॅ।

कोय भी नातो न्हॅ तोड़्यो जावै
बैरी की भी आवै छै ओळूॅ
बेर-बेर
एक खिंचाव
एक अकसाव
होवै छै बैर को भी।

अठी ताँई के फळ सूँ डॉठो तोड'र

न्हँ फैंक्यो जावै
अठी-उठी
फैंकबा अर छोड़ जाबा की
एक खास ठाम होवै छै,
ई लेखे
फैंकी जावै छै आम्बा की गूठळी
खाद का ढेर पे
अठी-उठी न्हँ।

पॅण जश्याँ थाँ ने म्हँई
अचाणचक झटक'र
फैंक द्यो गोद सूँ
सैं गैल पे...
न्हँ फैंक सकै मनख
वश्याँ
आपणॉ बैरी ई भी।

हेरो छो म्हँई?

हेर र्‌या छो म्हँई
हेळो दे र्‌या छो म्हारा नांव को
हजारूँ मूण्डा सूँ
यो साबित होयाँ पाछै भी
के कोय न्हँ म्हूँ अठी।

सिंघासन सूँ
दरबार्‌याँ, चाटूकाराँ का मूण्डा सूँ
लाखूँ बिगुलाँ का गरणाटा सूँ
जैकाराँ सूँ
म्हारो नांव तो
न्हँ बोल्यो ग्यो कदी सूँ,
दब्यो पड्‌यो छै
भूल्या थका उण्डापा मँ।

न्हँ पूग्यो
यो समचौ थाँ ताँई?
लाखूँ मूण्डाँ मँ
न्हँ समावै अब म्हारो नांव
महताऊ ओहड़ान् की आँगळयाँ सूँ

जे उठा ले कोय कदी,
म्हारो नांव
पड़'र
टूक टूक हो ज्यावै छै सगळा आँखर

तीन आँखर पाछै
गेल बिसर ज्या छै उच्चारबो
झूठ ही मान र्‌या छो न!
जीं सूँ चाहो, पूछ लो।

पॅण बुझी कोय न्हॅ
अठी ही छूँ सगळी
जशी छी जनम सूँ
ठीक वश्याँ ही।

ऊँचा सुर मॅ
बता न्हॅ पाऊँ आपणो नांव
भीड़ मॅ
धकिया'र बदा न्हॅ पाऊँ
आपणो नांव
सैं सूँ आंगूँच पाँत मॅ
पाछै सूँ।

सूना, चाँदी का सिंघासन पे
थाप देबा बेई आपणों नांव
अटपटो लागै छै

'म्हारा गीत जश्या गीत न्हॅ'
क्हैबा बेई पलटै न्हॅ जीभ
अधमरी, अधसूखी
औळ्याँ, आवाजाँ

बदा दे छै म्हारी आड़ी
आपणां ग्याळू रग़तहीण हाथ
ठीक बैमार टाबर की नांई
गोद मॅ आबा बेई,
ऊँ ही बग़त
आपणां सुरान् को ओछोपॅण
समझ लूँ छूँ म्हूँ।

ये सैं होतॉ सताँ
हेरबा की गरज होवे
तो हेरो,
अठी-उठी न्हॅ
हेत अर गळेड़ू सूँ गरणाती
म्हारी ही पांत मॅ।

चितेरो

झुटपटा मॅ
खुळी नद्दी का नसाँसाई पारा मॅ
कुण छै जे ओळख र्‌यो छै मूण्डो?
नीळो हंस
के बादळाँ सूँ भर्‌यो आभौ?

झाँक-झाँक चितरामाॅ की
न्हॅ दीखबा हाळी दुनिया मॅ
हेर न्हॅ पा र्‌यो कवि कोय चितराभ
आकळ-बाकळ हो'र
चुणबो करो छो, फेंक दो छो
तांबा वरणी खितिज सूँ,
आओ-आओ को हेळो कुण को
टकरा'र पौन की पूंठ सूँ
टूट ज्यावै छो झनझना'र
टूकड़ा बिखर ज्याता च्यारूँ मेर
चितराम कठी छै? कठी छै चितराम?

फूळनखरा झीळ के बीचै
राती कुमोदनी

मुळकबो करै छी होंठ दबायाँ
क्है री छी, न्हँ
न्हँ बणा पाया थैं।

चितेरा
थारी अजब कूँची ईं
थरता छू ज्यावै छै ऊँ ही बग़त
थारा अलेखूँ दरपॅण मॅ
कतई जाळो जे न्हँ लागै
ई सूँ ही म्हँई चिढ़ा र्‍यो छो न!

खलकटूयॉ का गळेडू सूँ जे
घुळ ज्यावै नद्‌दी को कनारो
कदी कदास की नसॉसाँ सूँ
फाट ज्यावै जे काळज्यो
रंग-रस चमचमा उठै तो
चमक उठैगी कूँची,
थाँका ही दरपॅण ईं
टाँक'र आभै की भींत पै
कुण जाणै
म्हूँ बैठ न्हँ जावूँगी
बड़ा सारा कैनवास के
आमै-सामै
ठीक थाँकी नांई?

(फूलनखरा झीळः उड़ीसा की एक झीळ)

छनीक सी बात

वाणी विहार सूँ कॉलेज चौरायॉ ताँई
सगळौ आभौ
कांई गूंगो होग्यो छै
बस की बारी सूँ झाँक'र
हेळो न्हॅं दे सकै छो
म्हारा नांव को...
बता न्हॅं सके छो सैण सूँ
आपणां
कामणगार्‌या म्हैल को
बारणो!

ई के पाछै
म्हारे
दोय अनोखा डैनॉ खड़ जाबो
अर मोटर सूँ खड़'र
म्हारो उड़ जाबो
मामूली बाताँ छी।

पॅण ऊँ ने तो गूँगा की नांई
टीन का टूकड़ा की नांई

जश्याँ ओळख्यो ही न्हॅं कदी
म्हारा सुपनां ईं...

नत पांतरै का दुख
अतना अजाण्या लागै छै के
लागै छै
दुख न्हॅं कदी छो
न्हॅं आज छै
म्हारो तो ग्हैरो सगपॅण छो कोय सूँ

सगपॅण न्हॅं होवै तो
थाँ को
हेत कठी, सोग कठी?

बरखा

म्हारो हाथ पकड़'र
खैंच'र न्हॅं ले जावै छै
म्हॅंई
आपणां टुपुर-टापर सामराज मॅं
पूछै कोय न्हॅं
कुणकी बाट उडीक री छो...
ऊँ के पाछै तो म्हॅंई

(वाणी विहारः भुवनेसर की उत्कल जगत पौसाळ)
(कॉलेजः कटक को रेवेशा कॉलेज)

खुल जाबो, फूट पड़णौ होवैगो
बरखा की नांई, बसकार्‌यॉ की नांई
पाक्या बोर का दूळका की नांई...
घूँसलान् मॅ बावड़ती चड़िया
म्हारा कांधा की टोकरी सूॅ
बोर का कीड़ा
न्हॅ झपटै
कॉई वॉं ईं काळम्या छै?
जाणै छै
म्हारो तोत
मंतर सूॅ वॉं ईं
आभै हाळी गेळ पे रोक देबा को,
ऊँ ही तोत की आड़ मॅ
होवे छै म्हारो हॉसबो-रोबो

न्हॅ जाणै कतनी बेर।

पांत पांत, चड़ी चुड़गळा कदी
कुआ खाई नद्‌दी की धार सूॅ
भर ग्या छा
म्हारै ऑंगणै
अर रूँख पे चढ’र
पसेवा सूॅ भीगी थकी म्हूॅ
तोड़ लाई छी
चळू भर’र सितारा।
ऊँ के पाछै तो फानूस की नांई

सजाबा लागी
सगळी गेल
जठी, जतनो भी अँध्यारो छो
ऊँ अँध्यारा का राज अर
हळाबोळ ईं
अणदेख्यो कर'र।

साखी

अटाटूट बरखा मॅं भी
कठी न्हॅं कठी
फट पड़े छै सूखी धरणी
तस सूॅं तड़फड़ा'र
लौट जावै छै पावणो
न्हॅं होवे फाणी बूँद भर।

बायरा का सिंघासन पे चढ़्या
सून की आड़ी बदती राणी का
काठ का किरीट पे
जरी को रींगट्यो तांई न्हॅं दीखै कठी
काळज्या मॅं कादो, झाड़्याँ, अँध्यारो
चकळौंद, जूँख भर्‌या छै तरान्तर
पॅण, पारिजात की सौरम सूॅं
गमक उठै छै च्यारूॅं मेर।

बादळाँ का डूँगर सूँ
फूट पड़े छै परताप सूरज का उजाळा को
साळ का रोही मॅं
खिर्‌या पात की सेज पे
सोई र्‌है छै धूप-छाँवळी

माटी तोड़'र खड़्यावै छै
अधीजी आवाज कोय की
'मत आओ।'

ओळखी छै पिरथी
सूरज को उजाळो न्हँ पड़्यो जठी
कदी,
चहक्यो न्हँ कदी
कदंब को सुपनो,

छै कोय ठाम बित्तो भर धरणी
भीजी न्हँ जे कदी
अतनी बरखाँ होयाँ पाछै भी?

म्हूँ साख भरूँ छूँ अठी
पाखाण भी बण चुकी छूँ अठी...।
अतना हेत
अतना समरपॅण के होताँ सताँ भी
पिघल्यो न्हँ जे हियो
धूज्या न्हँ जे होंठ
नाच न्हँ उठ्यो जे लोही
म्हँनै तो साख भरी छै ऊँ की
साख भरी छै निठुरपॅणा की,
उकेर्‌या छै म्हँ मॅ
न्हँ जाणै कतना आड़ा-ऊँळा आँखर
पछतावा का।

सैं चाह्याँ पे

बुला लाया कीं लेखे
काँय काँय न्हँ देख्यो म्हँनै...

मुळकण के पाछै को डमस
छीट को/ले ल्यो भलॉ ही चीख
कादा सूँ भँडी/ अँध्यारा मॅं
डूब्या घोंघा को
बड़प्पन
मुकुट की चमक के पाछै
कतनो छटपटाबो, कतना आयोजन
आपणॉ झूठापॅण के सिवा
भला कॉंई छै ये सगळा?

आजखाल तो
धड़कनाँ के औळे-दौळे
म्हैसूसबो करूँ छूँ एक भाटो
जे घणी सौराई सूँ
हो सकै छै एक सान
हों सकै छै कोय हथ्यार
ही' भी सकै छै

घणीं ऊण्डी ताजगी बीचै
कोई निठुर, न्हॅं हालबा हाळो भाटो।

छिन मॅं खमत खमाऊॅं छूँ
तो आगूंच छिन
खमत खमावणा न्हॅं कर पाऊँ
आप ई
ई बावड़ता तावड़ा को
नद्‌दी तींरे छानै-छानै लुक जाबो,

आखी रात पात खरबो
रूख सूँ,
नच्छत्र की तेज सौरम
कौंध जाबो म्हैड़ळा मॅं,
पछतावा का खुल्या पंजा के सामै
रूक ज्यागी धड़कन,
सगळोपॅण खो चुक्या
मनख की नसॉसां के
गरणाबा सूॅं इतर
कांई छै ये छैकड़लाँ?

कीं लेखे बुला लाया,
आप ई ही खमत खमाऊँ
के न्हॅं खमाऊँ
म्हॅंई तो बावड़नो होवैगो
ई ही बग़त

ईं तावड़ा, नद्दी, झड़ता पात
सौरम, पछतावा, नच्छत्र,
याँ सागळॉ ई चाह्तॉ सताँ
म्हँ ईं तो
मरणो होवैगो ईं ही बग़त।

तो फेर बावड़ ल्याँ

बावड़ ल्याँ, क्हो छो
ऊँ नद्दी तीरै?
घनेरा कुहासा ने
ढाँप द्यो होवैगो
यो तीर, ऊ तीर
फाणी पे कुहासो
ळिपट्यो होवैगो कळमीबेल जश्यो
सगळी चीजाँ होवैगी भँडी सणी भेद सूँ
ठीक आत्मा की नांई।

कुहासा पे उणो पड्यो
झिझक भर्‍यो एक रींगट्यो
म्हूँ,
थैं
म्हारै भीतर धूजती तातास छो
कश्या तड़काव मॅं
कश्या महादेस मॅं
पूग'र ठ्हैरैंगॉ म्हॉ?

नुआ फागण मॅं

धूळ को घर बणावैंगॉ
आम्बा का बौर सूँ
मुकुट थाँ को, म्हारा ग्हैणां
अरथ का, जस का
चळको मारता लोथ पे पग धरैंगॉ
पिरथी का मूण्डा पै
छनीक सा'क रींगट्या
आँक दे जे सूरज
किशोरी नच्छत्र की हरियाली ई
चालो छींट द्यॉ च्यारूँ मेर...

पिरथी की अंध्यारी सुरंग सूँ
मुग़त कर द्याँ मगज ई
ऊँ का सुपनां की समाधि पे
छू द्याँ कामण को कुतेरो...।

परमेसर की चाहना का पांख पे बिराज
बनाँ रूक्याँ घूमता नच्छत्र ईं
उमगता झर की
मूण्डे बोलती सेज पे
बुला लावैंगा,
लाखूँ चड़ी-चुड़गल्याँ ई दोनो चुगावैंगॉ
तो फेर चालो, बावड़ ल्याँ।

खेत के सैं बीचै
खड़्या-खड़्या ऊब जाता

कुहासा ईं
पाछै छोड़'र बद ज्यावैंगा,
जीवाँ का
बँटवारा करता दुख सूँ
एक बड़ो भाग उठा ले ज्यावैंगा
भोगता र्‌हैवैंगा...।



'मगन धूळ' ओड़िया कविता संग्रै 'तन्मय धूलि' को राजस्थानी भासा में उळथौ छै। ई ओड़िया कविता संग्रै के तांई साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिल चुक्यो छै। ई संग्रै में छत्तीस कवितावाँ छै। याँ कवितावाँ में हेत ई सोधबा की तस छै अर निज सूँ भेंटबा को उछाव। ई लेखे प्रेम आपणीं पीर ई बखाणती बगताँ भी एक उछ्व की नाँई म्हैसूस होवै छै। याँ कवितान् की असरकारक बिम्ब योजना म्हैड़ला का ठेठ तांई दस्तक देवे छै अर आपणा रंग में पाठकाँ के ताँई रंग द्ये छैं। दुनियावी हेत के ताँई आध्यात्म का सुर में बखाणबो याँ कवितावाँ को सैं सूँ सांतरौ पख छै।

मूळ पोथी 'तन्मय धूलि' की सामर्थवान कवियत्री **प्रतिभा शतपथी** को जनम सन् 1945 में कटक, ओड़िसा में होयो। वाँ ने ओड़िया भासा अर साहित्य में एम.ए. अर पीएच.डी. की डिग्री हासिल करी छै। याँ सूँ इतर वे अंग्रेजी, हिन्दी अर बांग्ला भासावाँ की भी जानकार छै। सन् 1968 सूँ ओड़िसा की नाळी नाळी महापोसाळ में पढ़ायाँ पाछै वे सेवानिवृत्ति को जीवन जीता सताँ लगौळग माँड रही छै। वाँ ने पंद्रह बरस की उमर में ही माँडबो सरू कर द्यो छो अर अबार वाँ को नाँव ई दौर का सैं सूँ महताऊ रचनाकाराँ में ल्यो जावै छै। वाँ की बीस सूँ बत्ती पोथ्याँ छप चुकी छै, ज्याँ में दस कविता संग्रै छै। वाँ की कवितान् को घणकरी भासान् में उळथौ भी छप चुक्यो छै।

ई पोथी को राजस्थानी उळथौ करबा हाळा **अतुल कनक** (जनम - 1967, रामगंजमण्डी, जिला - कोटा, राजस्थान) हिन्दी, अंग्रेजी अर इतिहास में एम.ए. छै। हिन्दी, राजस्थानी अर अंग्रेजी में लगौळग माँडबा हाळा अतुल कनक की अबार ताँई चार पोथ्याँ छपी छै। चौदह बरस की उमर सूँ ही अखिल भारतीय कविसम्मेलनाँ में आपणीं प्हैचाण बणा लेबा हाळा ई रचनाकार की छह हजार सूँ बत्ती रचनावाँ पत्र-पत्रिकान् में छप चुकी छै।

मोल : 60 रुपिया



ISBN : 978-81-260-2439-1



साहित्य अकादेमी